Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

Original Article

उमरिया जिले के पथरहटा गाँव मे हनुमान मंदिर में संरक्षित प्रतिमाओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ. नागेन्द्र शुक्ला

पीएच.डी, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग,

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्रालय, अमरकंटक, मध्यप्रदेश.

Manuscript ID: yrj-140402

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 4
Oct-Nov-Dec.- 2025
Pp. 10 - 20

Submitted: 7 Oct. 2025
Revised: 19 Oct. 2025
Accepted: 20 Nov. 2025
Published: 10 Dec. 2025

Corresponding Author:
डॉ. नागेन्द्र शुक्ला

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.20745349

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.20745349

सारांश:

प्रस्तुत शोध-पत्र में उमरिया जिले मे पथरहटा गाँव के हनुमान मंदिर में संरक्षित प्रतिमाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। उमरिया जिला मध्यप्रदेश के शहडोल संभाग के अन्तर्गत आता है। जिले के बाँधवगढ़, मानपुर, पाली, चंदियाँ,पथरहटा, कौड़िया आदि जगहों से ब्राह्मण जैन एवं बौद्ध धर्म से सम्बन्धित प्रतिमाएँ ज्ञात हुई है। ध्यातव्य है कि इस क्षेत्र से प्रतिमाओं में शिवलिंग, गणेश, कौमारी, माहेश्वरी, वैष्णवी, नर्मदा आदि प्रतिमाओं के साक्ष्य प्राप्त होना ना केवल प्रतिमा सौन्दर्यशास्त्र का बोध कराता है वरन इस क्षेत्र में मुख्य रूप से शैव एवं शाक्त सम्प्रदायों के प्रचार प्रसार में प्राप्त राजकीय संरक्षण की भूमिका तथा कला एवं संस्कृति के पुष्पित पल्लवित होने में क्षेत्रीय सांस्कृतिक विरासत की महती भूमिका पर भी अंतदृष्टि प्रदान करता है। उल्लेखनीय है कि उमरिया जिले से प्राप्त प्रतिमाएँ कलचुरी कालीन कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रस्तुत शोधपत्र में उमरिया जिले के पथरहटा गाँव के हनुमान मंदिर में संरक्षित प्रतिमाओं प्रतिमाओं का सूक्ष्म विवरण दिया गया है। वस्तुतः इन प्रतिमाओं का निर्माण भूरे बलुआ प्रस्तर से हुआ है तथा कालखंड लगभग ग्यारहवीं शती ईसवी से लेकर बारहवीं शती ईसवी तक की तिथि अनुमानित है। प्रस्तुत शोध पत्र शैव, वैष्णव, शाक्त एवं जैन प्रतिमाओं के प्रतिमाशास्त्रीय अनुशीलन एवं उनके ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पुनर्पाठ का प्रयास है, जो इस क्षेत्र की मूर्तिकला परंपरा के नए आयाम उद्घाटित करता है।

प्रमुख शब्द - प्रतिमाशास्त्र, कला, धर्म, संप्रदाय, धरोहर.

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. नागेन्द्र शुक्ला (2025). उमरिया जिले के पथरहटा गाँव मे हनुमान मंदिर में संरक्षित प्रतिमाओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन. Young Researcher, 14(4), 10 – 20. https://doi.org/10.5281/zenodo.20745349

Creative Commons

OPEN ACCESS

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

प्रस्तावना:

उमरिया जिला मध्य प्रदेश के उत्तर पूर्व में स्थित है। यह जिला 23°38' से 24°20' उत्तरी देशान्तर और 80°28' से 82°12' पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। जिले की समुद्र तल से ऊँचाई 487.95 मीटर है। यह जिला पूर्व में शहडोल, पश्चिम में कटनी, उत्तर में सतना एवं रीवा और दक्षिण में डिंडौरी जिलों से घिरा हुआ है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल '4076' वर्ग किलोमीटर है। भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर जिले को तीन प्रभागो में विभाजित किया जा सकता है, मैकल-श्रेणी, पूर्वी पठार की पहाड़ियाँ एवं ऊपरी सोन घाटी। मैकल पर्वतमाला सतपुड़ा पर्वत की पूर्वी चोटी पर स्थित है। इन पहाड़ियों की औसतन ऊँचाई 1006 मीटर है। यह पहाड़ियाँ बाँधवगढ़ उप मंडल की दक्षिणी सीमा के साथ-साथ उमरिया शहर के दक्षिण तक फैली हुई है। उमरिया जिले के उत्तर में पूर्वी पठार की पहाड़ियाँ है, जो बाँधवगढ़ तहसील की पश्चिम से उत्तर पूर्व तक फैली हुई है, जो पुराने ऐतिहासिक किले को चिन्हित करती है। यह सोन नदी एवं समदिन नाला संगम तक फैली हुई है, आगे पूर्व में यह सीमा सीधी जिले में सोन और बनास के संगम पर समाप्त हो जाती है। यह सरेखण शहडोल संभाग के ब्यौहारी-मानपुर मार्ग से गुजरता है। ऊपरी सोन घाटी, नदी के किनारे-किनारे एक संकीर्ण भाग में फैली हुई है, यह छोटे-छोटे खुले मैदाने का एक क्रम है जो निकट आती पहाड़ियों से बाधित होता है। ऊपरी सोन घाटी के पश्चिमी सीमा में महानदी घाटी है, जो एक व्यापक उपजाऊ मैदान प्रदान करती है। इसके अलावा ऊपरी जोहिला घाटी भी इसी घाटी के अन्तर्गत आती है। ***(डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैडबुक, 2011: 3)***

उमरिया क्षेत्र का ऐतिहासिक वर्णन प्राचीन काल से मिलता है। महाभारत की एक कथा से ज्ञात होता है कि यह क्षेत्र महाराज विराट के अधीन था। कुछ समय तक के लिए यह क्षेत्र मगध शासको द्वारा भी शासित रहा। मगध शासक बिम्बिसार एवं अजातशत्रु ने इस क्षेत्र को विकसित किया था। इसके पश्चात शिशुनाग, नन्द वंश, मौर्य, शुंग, कुशान, मघ, गुप्त, कलचुरी एवं बघेल शासको का शासन इस क्षेत्र पर रहा है। इस जिले से पुरातत्व महत्व के रूप में मूर्तियाँ, मंदिर किले स्थापत्य-खण्ड, विहार, चैत्य, एवं अन्य पुरावशेष प्राप्त हुए है।(***शाह एवं मिश्र, 2010: 64***)। उमरिया जिले के प्रमुख पुरास्थल पाली बिरासनी माता मंदिर, उमरिया, चंदियाँ, पथरहटा, बाँधवगढ़, कौड़िया, रुहानिया आदि है। इन पुरास्थलों से शैव, वैष्णव, शाक्त, जैन एवं बौद्ध संप्रदाय से सम्बन्धित पुरावशेष प्राप्त हुए है, जो इस क्षेत्र में उनके प्रचार-प्रसार की प्रचुर मात्रा में जानकारी वितरित करते है। यहाँ से प्राप्त पुरावशेष प्रमुखता कलचुरी कालीन है, जिनका समय नवमी शती ईसवी से लेकर बारहवीं शती ईसवी तक का है। ***(शर्मा: 1971)***

पथरहटा गाँव मध्य प्रदेश में उमरिया जिले की चंदिया तहसील में स्थित है। यह उप-जिला मुख्यालय चंदिया (तहसीलदार कार्यालय) से 10 किलोमीटर दूर और जिला मुख्यालय उमरिया से 30

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

किलोमीटर दूर स्थित है। पुरातत्व की दृष्टि से यह गाँव अत्यंत समृद्ध एवं महत्वपूर्ण रहा होगा। वर्तमान में ये इस गाँव में पुरावशेष यत्र-तत्र बड़ी संख्या में पाए जाते है। गाँव के आवासीय मकानों की दीवारों में प्राचीन मंदिरों आदि के अवशेष भी जड़े हुए देखे जा सकते है। इस गाँव से प्राप्त मूर्तियाँ कला का अद्वितीय उदाहरण है। निश्चय ही इस गाँव में प्राचीन में प्राचीन मंदिर रहे होंगे। ***(शाह एवं मिश्र, 2010: 64)***।

शोध पद्धति:

शोध पद्धति मुख्यतः क्षेत्रीय सर्वेक्षण पर आधारित है। प्राथमिक आँकड़े स्थानीय स्थलों पर स्थित प्रतिमाओं के व्यवस्थित अवलोकन एवं प्रलेखन के माध्यम से प्राप्त किए गए। प्रतिमाओं के मूर्तिशास्त्रीय एवं प्रतीकात्मक लक्षणों के विश्लेषण तथा व्याख्या के प्रतिमाशास्त्रीय ग्रन्थो का उपयोग किया गया है।

पथरहटा गाँव के हनुमान मंदिर में सरंक्षित एवं बाहर पेड़ के नीचे रखी हुई प्राचीन प्रतिमाओ में शिवलिंग, उमामहेश्वर, माहेश्वरी, विष्णु, नृसिंह, देवी, चौमुखी जिन प्रतिमा ज्ञात हुई है। प्रतिमाओं का विवरण निम्नवत है :

उमा-महेश्वर (चित्र क्र.:1)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 62× 43×13 सेन्टीमीटर
- माध्यम - भूरा बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 1: उमा-महेश्वर

विष्णुधर्मोत्तरपुराण के अनुसार उमा-महेश्वर प्रतिमा में उमा और शिव को एक ही आसन पर आलिंगनबद्ध करते हुए प्रदर्शित किया जाना चाहिए। जटाजूट धारण किए हुए भगवान शिव के दाहिने हाथ में नीलोत्पल और बायां हाथ उमा के कंधे पर दिखाना चाहिए। उमा का दाहिना हाथ शिव के कंधे पर और बाएं हाथ में कमल का फूल होना चाहिए ***(श्रीवास्तव 2022: 63)***।

प्रतिमा में चतुर्भुजी शिव को पीठासीन पर ललितासन मुद्रा में आरूढ़ एवं देवी उमा को भी शिव के बायीं जाँघ में ललितासन मुद्रा में आसीन दिखाया गया है। शिव को चतुर्भुजी एवं उमा को द्विभुजी अंकित किया गया है। शिव जटामुकुट, कंकण, एकावली, गलहार, मेखला, अधोवस्त्र से सुसज्जित है। देव की ऊपरी दाएं हाथ में सम्भवत:

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

सर्प आयुध एवं निचले हाथ मे श्री-फल अंकित है। देव के ऊपरी बाए हाथ पर अक्षमाला अंकित है एवं देव को निचले बाएं हाथ से उमा के उरोज को स्पर्श करता हुए अंकित किया गया है। देवी उमा को भी द्विभुजी अंकित किया गया है। देवी उमा भी स्त्रियोचित आभूषण पहनें हुए सुसज्जित है। देवी के केश आकर्षक जूड़े में बंधे हुए है। देवी कर्णकुण्डल, गलहार, कंकण, पारदर्शी अधोवस्त्र पहने हुए अंकित है। प्रतिमा वितान में शिव के दायें पैरों के समीप गणेश एवं उनके वाहन नन्दी को भी अंकित किया गया है। प्रतिमा वितान में ऊपर की पट्टिका पर वेग मुद्रा में मालाधारी विद्यागण एवं प्रतिमा वितान के दोनों ओर शिवगणों को अंकित किया गया है।

माहेश्वरी(चित्र क्र.:2)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 98× 51×20 सेन्टीमीटर
- माध्यम - भूरा बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 2: माहेश्वरी

शिव के द्वारा भेजी गयी शक्ति का नाम महेश्वरी है, इनकी वेशभूशा, स्वरूप एवं वाहन शिव के समान ही होने चाहिये। *विष्णुधर्मोत्तरपुराण* में वर्णित है कि देवी को श्वेतवर्णी, जटा जूटधारी, पंचमुखी, त्रिनेत्री एवं वृषभ पर आसनस्थ एवं छः भुजी होने होने का विधान प्रस्तुत किया गया है। छःभुजाओ में से दाहिनी ओर की भुजाओ में क्रमशः सूत्र, डमरू एवं एक हाथ वरद मुद्रा में होने का विधान वर्णित है तथा बायें हाथो में क्रमश शूल, घण्टा एवं एक अभय मुद्रा में होने का विधान प्रस्तुत है ***(विष्णुधर्मोत्तरपुराण 1958 56-57)***। *रूपमण्डन* में वर्णित है कि महेश्वरी को वृषभासीन एवं चतुर्भुजी होना चाहियें। उनके चारो हाथो में क्रमशः दक्षिणाध क्रम में क्रमशः कपाल, शूल, खटवांग एवं एक हाथ वरद मुद्रा में होने का विधान प्रस्तुत किया गया है ***(रूपमण्डन, 1996: 196-97)***।

पथरहटा से प्राप्त भूरा बलुआ प्रस्तर खण्ड में निर्मित चतुर्भुजी महेश्वरी को ललितासन मुद्रा में वृषभ पर आसनस्थ अंकित किया गया है। देवी को जटा-जूट, एकवाली, गलहार, कर्णकुण्डल, मेखला, केयूर, पैजानियाँ, कंकण, कमर में कटीसूत्र पहने हुए दर्शित किया गया है। देवी के ऊपरी दाएं हाथ में त्रिशूल एवं निचला हाथ वरद मुद्रा में अंकित है। देवी की ऊपरी हाथ में चक्र एवं नीचे के हाथ मे कमण्डल दर्शित है। देवी के ऊपर एवं नीचे उपासक-उपासिकाओं को अंकित किया गया है। देवी के सिर के ऊपर मालाधारी विद्यागणो का अंकन है।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

नर्मदा (चित्र क्र.: 3)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 91× 53×10 सेन्टीमीटर
- माध्यम - भूरा बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 3: नर्मदा

नर्मदा की प्रतिमाएँ प्रायःगौरी एवं पार्वती की प्रतिमाओं से अत्यधिक समानता रखती है, जिसके कारण उनकी पहचान करना कई बार कठिन हो जाता है। पौराणिक परंपराओं में नर्मदा को भगवान शिव की पुत्री माना गया है, इसलिए नर्मदा तथा गौरी-पार्वती के मध्य माता-पुत्री का संबंध स्थापित किया जाता है। पूर्वमध्यकालीन मूर्तिकला में गंगा के समान नर्मदा का भी देवी रूप में अंकन किया गया है। नर्मदा प्रतिमाओं में उन्हें गौरी की भाँति समृद्ध आभूषणों एवं जटामुकुट से अलंकृत दिखाया जाता है। उनके हाथों में सामान्यतः कमल धारण कराया गया है, जबकि कुछ प्रतिमाओं में त्रिशूल तथा अक्षमाला भी अंकित मिलती है। गंगा प्रतिमाओं की तरह नर्मदा की प्रतिमाओं में पूर्णघट और कमल जैसे आयुधों का भी समावेश होता है। इन प्रतिमाओं की एक महत्वपूर्ण विशेषता देवी के वाहन मकर तथा ऋषि मार्कण्डेय को अभय प्रदान करते हुए उनका चित्रण है ***(चढ़ार, 2017:87)***।

नर्मदा की यह प्रतिमा चतुर्भुजी है। वे जटामुकुट,कर्णकुण्डल, कंकण, अधोवस्त्र, गलहार पहने हुए सुसज्जित है। देवी दोनों हाथ से शंख को पकड़े हुई अंकित है। निचले बायें हाथ मे कमण्डलु एवं निचला दायाँ हाथ वरद मुद्रा में अंकित है।

देवी प्रतिमा (चित्र क्र.: 4)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 48× 32×17 सेन्टीमीटर
- माध्यम - भूरा बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 4: देवी प्रतिमा

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

पथरहटा से प्राप्त देवी की इस प्रतिमा का ऊपरी भाग भग्न अवस्था में है। जिसमें देवी का मुख, दायीं ओर के दोनो हाथ एवं दायाँ पैर खण्डित है। देवी ललितासन मुद्रा में आसीन है। देवी एकावली, गलहार, कंकण, पैजानियों, मेखला एवं पारदर्शी अधोवस्त्र से सुसज्जित है। देवी के ऊपरी बाये हाथ में चक्र एवं निचले में पॉश का अंकन है। देवी के दायी ओर के हाथ भग्न होने के कारण आयुध अस्पष्ट है। पॉश एवं चक्र के आधार पर यह प्रतिमा वैष्णवी ? की प्रतीत होती है। प्रतिमा वितान में देवी के उपासकों को भी सुसज्जित किया गया है।

शिवलिंग (चित्र क्र.:5)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माध्यम - भूरा बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 5: शिवलिंग

भारत में प्राचीन काल से ही शिवलिंग की पूजा की जाती रही है। महाकाव्य, रामायण और महाभारत में शिवलिंग को सृजन का मुख्य साधन माना गया है ***(चढार, 2017: 91)***। प्राचीन काल से ही शिवलिंगों का निर्माण मुख्यतः प्राकृतिक शिवलिंग, त्रैराशिक शिवलिंग, मुखलिंग, अष्टोत्तर शिवलिंग तथा सहस्त्र शिवलिंग के रूप में होता आया है। त्रैराशिक शिवलिंग उन्हे कहते है जो एक निश्चित मानक के अनुसार तीन भागों में बने होते है। यथा भोग-पीठ गोलाकार, भद्रपीठ अष्टकोणीय और ब्रह्मपीठ वर्गाकार बना होता है। भोगपीठ पर ब्रह्मसूत्र रेखाओं का अंकन होता है ***(श्रीवास्तव 2022: 63)***।

पथरहटा से प्राप्त यह शिवलिंग संभवतः त्रैराशिक लिंग थी, जिसे बाद के समय में सम्भवतः मुखलिंग में परिवर्तित कर दिया गया। इस लिंग में पद्मासन मुद्रा में आसीन शिव को लिंग में अंकित कर दिया गया है। यहाँ से एक अन्य शिवलिंग जलहरी सहित प्राप्त हुई है जो त्रैराशिक शिवलिंग है। सम्भवतः यह लिंग भी पूर्वकाल में त्रैराशिक शिवलिंग रही होंगी। यहाँ से प्राप्त शिवलिंग को चतुष्कोणीय जलहरी में स्थापित किया गया है। इस लिंग में अंकित शिव को पद्मासन मुद्रा में आसीन दिखाया गया है। देव जटामुकुट, कर्णकुण्डल, कंकण, अधोवस्त्र, गलहार पहने हुए अंकित है। शिव अपनी जटाओं में गंगा नदी को समाहित करते हुए अंकित है।

शिवलिंग (चित्र क्र.: 6)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माध्यम - बलुआ पत्थर

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 6: शिवलिंग

पथरहटा से प्राप्त यह लिंग त्रैराशिक शिव लिंग है जिसे चतुष्कोणीय जलहरी पर स्थापित किया गया है। इस शिवलिंग में शिवलिंग के तीनों भाग भोग पीठ, भद्रपीठ, ब्रह्मपीठ का शिल्पांकन अंकित है।

विष्णू (चित्र क्र.:7)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 98× 51×20 सेन्टीमीटर
- माध्यम - बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 7: विष्णू

पौराणिक त्रिदेवों में विष्णु की गणना जगत के पालनकर्ता के रूप में विकसित हुई लेकिन वैष्णव संप्रदाय में विष्णु की गणना सर्वोच्च देवता के रूप में विकसित हुई है ***(श्रीवास्तव,2022 :12)***। प्रतिमा शास्त्र के अनुसार भगवान विष्णु को किरीटमुकुट, वनमाला, वैजयंती माला एवं उनके चार हाथों में शंख, चक्र, गदा व पद्म धारण किये हुए होना चाहिए ***(गुप्ता 2002: 34-35)***।

पथरहटा से प्राप्त विष्णु को पद्म पीठ पर समभंग मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। देव की प्रतिमा चतुर्भुजी है, उन्हे किरीटमुकुट, कर्णकुण्डल, केयूर, कंकण, गलहार, वनमाला, यज्ञोपवीत, अधोवस्त्र, उरुद्याम पहने हुए अंकित है। देव के तीन हाथ सुरक्षित एवं बायीं ओर का निकला हाथ भग्न अवस्था में है। देव के ऊपरी दायें हाथ में गदा एवं निचला दाया हाथ वरद मुद्रा में अंकित है। ऊपरी बाएं हाथ में देव चक्र एवं निचाला खण्डित अवस्था

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

में है। प्रतिमा वितान में राम, नृसिंह, वामन आदि देवताओं का अंकन है। प्रतिमा वितान के नीचे अंजलि मुद्रा में भू देवी एवं श्रीदेवी एवं बाईं और विष्णु के द्वार पर जय विजय का भी अंकन है। विष्णु की ऊपरी भाग में बायीं ओर मालाधारी विद्याधर वेग मुद्रा में अंकित है। दायीं ओर भी सम्भवतः मालाधारी विद्याधरो का अंकन रहा होगा जो प्रतिमा वितान के खण्डित होने के कारण स्पष्ट नहीं है। प्रतिमा को ग्रामीणों द्वारा लेपित कर दिया गया है।

विष्णू (चित्र क्र.:8)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 58× 40×15 सेन्टीमीटर
- माध्यम - बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 8: विष्णू

प्रतिमा में विष्णु को पद्म पीठ पर समभंग मुद्रा में खड़े हुए अंकित किया गया है। स्कन्ध के ऊपर वाले भाग को ग्रामीणों द्वारा सीमेन्ट के द्वारा जोड़ दिया गया है। देव यज्ञोंपवीत, गलहार वनमाला, पहने हुए अंकित है। देव के उपासकों को भी अंकित किया गया है।

नृसिंह (चित्र क्र.:9)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 66× 35×13 सेन्टीमीटर
- माध्यम - बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 9: नृसिंह

प्रतिमाशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह अवतार अत्यन्त महत्वपूर्ण है।विष्णु ने नृसिंह अवतार हिरणाकश्यप का वध करने के लिए धारण किया था। प्रतिमाशास्त्रीय ग्रन्थो में तीन प्रकार की नृसिंह प्रतिमा बनाने के विधान वर्णित है जो नृसिंह, योग नृसिंह एवं स्थानक नृसिंह है। स्थानक नृसिंह का उपरी भाग सिंह एवं निचला भाग मानव के के होने का विधान है। प्रतिमा प्रायः चार हाथो को होती है जिनमे से दो

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-4 | October – November – December 2025

हाथो में आयुध हो सकते है। प्रतिमा के अनेक हाथ भी दर्शाये जा सकते है जिनमे विभिन्न आयुध हो सकते है। विष्णु के दो हाथ हिरणाकश्यप का वध करने में संलग्न होते है। ***(सिन्हा व दिनेशचन्द्र, 1990 :46-47)***।

देव की यह प्रतिमा स्थानक नृसिंह की जहाँ उपरी भाग सिंह व निचला भाग मानव रूप में अंकित किया गायन है। प्रतिमा चतुर्भुजी है, देव के ऊपरी दोनों हाथ खण्डित एवं निचले दोनों हाथ से हिरण्यकश्यप के वक्ष स्थल को अपने तीक्ष्ण नाखूनों से विदारित करते हुए प्रदर्शित है। वर्तमान में प्रतिमा वितान को ग्रामीणों द्वारा लेपित कर दिया गया है।

चौमुख जिन प्रतिमा (चित्र क्र.:10)

- प्राप्ति स्थान - पथरहटा
- माप - 89× 47×53 सेन्टीमीटर
- माध्यम - भूरा बलुआ पत्थर
- समय काल - लगभग 11-12 वीं शती ईसवी

चित्र क्रमांक - 10: चौमुख जिन प्रतिमा

जिन चौमुखी या सर्वतोभद्रिका प्रतिमा का आशय ऐसी प्रतिमा से है जिसे हर दिशा से शुभ एवं मंगलकारी माना जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि एक ही शिलाखंड पर चारों ओर चार जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ अंकित की जाती है, जिससे वह प्रतिमा चारों दिशाओं से पूजनीय एवं दर्शनीय बन जाती है। ***(तिवारी एवं गिरि, 1997: 303)***।

हनुमान मंदिर के समीप ही पीपल के पेड़ के नीचे चौमुख जिन प्रतिमा ज्ञात हुई है। प्रतिमा में उन्हे उन्हे कमलपीठिका पर पद्मासन मुद्रा में ध्यान करते हुए शिल्पांकित है। एक तरफ ऋषभनाथ है जिनके सर के सात फण युक्त सर्प दर्शित है। उन्हे, गलहार, लम्बे कर्णकुण्डल, पहने हुए दर्शित किया है। उनके अगल बगल यक्ष-यक्षिणी की भी आकृति है जिनके उपरी भाग खण्डित है। प्रतिमा वितान के निचले भाग में दो सिंह को भी शिल्पांकित किया गया है। शेष तीन प्रतिमाएँ भी पद्मासन मुद्रा में आसनस्थ है जिनमे उन्हे ध्यान लगाये हुए अंकित किया गया है। उनके अगल बगल यक्षिणी है जो खण्डित अवस्था में है तथा प्रतिमा वितान के नीचे दो सिंह अंकित है।

निष्कर्ष:

उमरिया ज़िला मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमि है, जहाँ प्राचीन धार्मिक परंपराओं और कला की अनूठी झलक देखने को मिलती है। इस ज़िले के पथरहटा गाँव में स्थित हनुमान मंदिर शैव एवं शाक्त प्रतिमाओं

के संरक्षण और अध्ययन के लिए विशेष महत्व रखता है। यहाँ से प्राप्त मूर्तियाँ केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि वे इस क्षेत्र की मूर्तिकला परंपरा और सांस्कृतिक विकास का जीवंत दस्तावेज़ भी प्रस्तुत करती है। इन प्रतिमाओं का अस्तित्व यह दर्शाता है कि इस क्षेत्र में शैव, शाक्त, वैष्णव एवं परंपराएँ अत्यधिक प्रभावशाली रही होंगी और उन्हे तत्कालीन राजकीय संरक्षण भी प्राप्त था। कलचुरी काल को इन प्रतिमाओं के निर्माण का स्वर्णकाल माना जाता है। पथरहटा मंदिर की प्रतिमाओं का निर्माण भी इसी अवधि से किया गया है जिनका समय लगभग ग्यारहवीं शती से बारहवीं शती के आसपास का है। कलचुरी शासकों के संरक्षण में यहाँ मूर्तिकला ने उच्च स्तर की परिपक्वता प्राप्त की। इन प्रतिमाओं की विशिष्टता उनकी कलात्मक शैली, अलंकरण, भावाभिव्यक्ति और प्रतीकात्मकता में झलकती है। यह प्रतिमाएँ न केवल धार्मिक श्रद्धा का केन्द्र रहीं, बल्कि क्षेत्रीय सांस्कृतिक चेतना और कलात्मक सौन्दर्यबोध की भी अभिव्यक्ति करती है। शैव, वैष्णव, शाक्त एवं जैन परंपरा से संबंधित प्रतिमाओं में शिवलिंग उमामहेश्वर, माहेश्वरी, नर्मदा, विष्णू , नृसिंह, चौमुखी जिन प्रतिमाएँ आदि ज्ञात हुई है। नर्मदा नदी की दूरी यहाँ से लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर है और नर्मदा देवी की प्रतिमा इस क्षेत्र की धार्मिक मान्यताओं और लोकविश्वास का परिचायक है, जो नदी को देवी स्वरूप मानकर पूजने की परंपरा को रेखांकित करती है। इन प्रतिमाओं का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि कला, धर्म और संस्कृति यहाँ परस्पर गहराई से जुड़े हुए थे। प्रतिमाओं में केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि तत्कालीन समाज की जीवन दृष्टि और सांस्कृतिक मूल्यों की भी झलक मिलती है। पथरहटा की प्रतिमाएँ यह सिद्ध करती है कि उमरिया क्षेत्र कलचुरी कला का एक सशक्त केन्द्र था और मंदिरों के अलावा आम जन के बीच भी प्रतिमा रखने की परम्परा विद्यमान थी।

निष्कर्षत:

यह कहा जा सकता है पथरहटा, हनुमान मंदिर की प्रतिमाएँ प्रतिमाशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक अनुशीलन प्रस्तुत करती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि प्रतिमाएँ केवल उपासना का साधन न होकर ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक धरोहर के रूप में भी महत्त्वपूर्ण है। इनसे न केवल शैव-शाक्त परंपरा के प्रसार का ज्ञान होता है, बल्कि उस युग की कलात्मक परिपक्वता और सांस्कृतिक जीवन की गहराई का भी बोध होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

1. गुप्ता, एस. पी, 2002, *एलिमेन्ट्स ऑफ इंडियन आर्ट*, नई दिल्ली, डी.के. प्रिन्टवर्ल्ड
2. चढ़ार, मोहन लाल, 2017, *अमरकंटक क्षेत्र का पुरावैभव* , एस. एस. डी. एन ., प्रकाशन नई दिल्ली

3. *डिस्ट्रिक्ट सेन्सस हैडबुक*, उमरिया, 2011, डायरोक्टेरेट ऑफ सेन्सस ऑपरेशन, मध्यप्रदेश
4. तिवारी,मारुतिनन्दन एवं गिरि, कमल, 1997, *मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. शर्मा, राजकुमार, 1997, *मध्यप्रदेश के पुरातत्व का सन्दर्भ ग्रन्थ*, मध्यप्रदेश ग्रन्थ अकादमी, भोपाल
6. शाह, अशोक, मिश्र ओमप्रकाश एवं नगायच, 2010, *उमरिया जिले का पुरातत्व,* सर्वेक्षण प्रतिवेदन, पुरातत्व अभिलेखागार एवं संग्रहालय मध्यप्रदेश शासन, भोपाल,
7. शाह, प्रियबाला, 1956, *विष्णुधर्मोत्तरपुराण*, बड़ौदा
8. श्रीवास्तव, बलराम, 1996, *रूपमण्डन,* मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
9. श्रीवास्तव, बृजभूषण, 2022, *प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला*, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, सप्तम् संस्करण
10. सिन्हा, कमलेश व दिनेशचंद्र 1990, *भारतीय प्रतिमा विज्ञान*, अयन प्रकाशन, नई दिल्ली